Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 53–55

सहजनः लाभ, व्यावसायिक खेती एवं पौध सुरक्षा तकनीकें

डॉ. राजेश आर्वे[1], डॉ. पंकज मईड़ा[1], डॉ. डी. के. इनवाती[1], डॉ. बसंत कचौली[2], एवं डॉ. के.ए.खान[1]

सहायक प्राध्यापक[1], वैज्ञानिक[2]

के. एन. के. उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म.प्र.), भारत।

Email Id: – drrajeshaarwe@gmail.com

स्थानीय भाषा में सहजन को मुनगा या मोरिंगा के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय मूल का मोरिंगेसी परिवार का सदस्य है और इसका वनस्पतिक नाम ***मोरिंगा ओलीफेरा*** है। सहजन एक बहुवर्षिक और छोटी पत्तियों वाला लगभग दस मीटर उंचाई का कमजोर तना वाला पौधा है। इसकी खासियत यह है कि यह कमजोर जमीन पर भी बगैर सिंचाई व देखभाल के सालों भर हरा–भरा रहता है।

सहजन का पौधा तेजी से बढने वाला पौधा होता है। सहजन की खेती से दस महीने में एक लाख रुपए तक कमा सकते हैं। पहले साल के बाद साल में दो बार उत्पादन होता है और आमतौर पर एक पेड़ दस साल तक अच्छा उत्पादन करता है।

सहजन की खेती से कमाई

एक एकड़ में करीब 600 पौधे लग सकते हैं। सहजन के पेड़ 12 महीने में उत्पादन देते हैं। कुल उत्पादन 3500 किलो तक हो जाता है। सहजन का फुटकर रेट आमतौर पर 40 से 50 रुपए रहता है। थोक में इसका रेट 25 रुपए के आसपास होता है। इस तरह से 7.5 लाख का उत्पादन हो सकता है। अगर इसमें से लागत निकाल दें तो 6 लाख तक का फायदा हो सकता है। सहजन की खेती में सबसे खास बात ये है कि ये कम लागत और न्यूनतम रखरखाव में बहुत ज्यादा मुनाफे देने वाला फसल है।

सहजन के लाभ

सहजन का पौधा कुपोषण दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सहजन औषधीय गुणों से भरपूर है। सहजन बहुउपयोगी पौधा है। सहजन के पौधे के सभी भागों, फल, फूल, पत्ती, का प्रयोग भोजन, दवा औद्योगिक कार्यो आदि में किया जाता है। मोरिंगा में प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व व विटामिन है। सहजन में दूध की तुलना में चार गुना पोटेशियम, संतरा की तुलना में सात गुना विटामिन सी पायी जाती है। सहजन या मोरिंगा के फूल,फल और पत्तियों का भोजन के रूप उपयोग में लाया जाता है। सहजन की छाल, पत्ती, बीज, गोंद, जड़ आदि से आयुर्वेदिक औषधियाँ बनायी जताई हैं। जिससे 300 प्रकार की बीमारियों दूर की जा सकती है।

मुनगा के पौधा से गूदा निकालकर कपड़ा और कागज उद्योग के काम में व्यवहार किया जाता है। हमारे देश की कई आयुर्वेदिक कम्पनियाँ सहजन से दवा बनाकर (पाउडर, कैप्सूल, तेल बीज आदि) विदेशों में निर्यात कर रहे हैं। क्षेत्र में सहजन की खेती से दूर के बाजारों में सब्जी के रूप में इसका सालों भर बिक्री कर आमदनी का साधन बना सकते हैं। इसके खेती औषधीय व औद्योगिक गुणों के कारण किसानों में लोकप्रिय हो सकती है। सहजन बिना किसी विशेष देखभाल पर आमदनी देनी वाली फसल है। किसान भाई अपने घरों के आस–पास अनुपयोगी बेकार, जमीन पर सहजन के कुछ पौधे लगा सकते हैं।

जलवायु

सहजन विभिन्न पारिस्थितिक अवस्थाओं में उगने वाला पौधा है। सहजन की खेती की

सबसे बड़ी बात ये है कि ये सूखे की स्थिति में कम से कम पानी में भी जिंदा रह सकती है। कम गुणवत्तावाली मिट्टी में भी ये पौधा लग जाता है। इसकी वृद्धि के लिए गर्म और नमीयुक्त जलवायु और फूल खिलने के लिए सूखा मौसम सटीक है। कम या ज्यादा वर्षा से पौधे को कोई नुकसान नहीं होता है। सहजन की खेती को पाला से नुकसान होता है। सामान्यतया 25–300 के औसत तापमान पर सहजन के पौधा का हरा–भरा व काफी फैलने वाला विकास होता है। फूल आते समय 400 से ज्यादा तापमान पर फूल झड़ने लगता है।

मिट्टी

सहजन की खेती सभी प्रकार की मिट्टियों में जा सकती है। बेकार, बंजर और कम उर्वरा भूमि में भी इसकी खेती की जा सकती है, किंतु व्यवसायिक खेती के रूप में, जहाँ पर साल में दो बार फलने वाला सहजन के प्रभेदों के उद्देश्य से खेती की जाती है। वहाँ पर मिट्टी का चयन 6–7.5 पी.एच. मान वाली बलुई दोमट मिट्टी करें।

सहजन की किस्में

सहजन में दो बार फलने वाली किस्में–
ओडिसी, पी.के.एम.1, ज्योति –1, कोयेंबटूर 1

पी.के.एम. 2

पौधा रोपन के बाद इसमे फूल आने लगते हैं और 8 से 9 महीने के बाद इसकी उपज शुरू हो जाती है। साल में दो बार इसकी फसल होती हैद्य इसके पौधे से करीब 200 से 350 फली पैदा होती है जो लगातार 4 से 5 साल तक उपज देती है। इसकी प्रत्येक फली लंबाई में बड़ी होती है और स्थानीय बाजार के मुकाबले इसकी मांग खासकर बड़े शहरों में होती है।

कोयेंबटूर. 2

इस किस्म की फली की लंबाई 25 से 35 सेंटीमीटर होती हैद्य फली का रंग गहरा हरा और स्वादिस्ट होता है। प्रत्येक पौधा करीब 250 से 375 पैदा करता है। सहजन की प्रत्येक फली भारी और गुदेदार होती है। प्रत्येक पौधा तीन से चार साल तक उपज देता है।

ज्योति–1

सहजन के इस किस्म का पौधा 4–6 मीटर उंचा होता है। तथा 90–100 दिनों में इसमें फूल आते हैं। जरूरत के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में फल की तुड़ाई करते रहते हैं। पौधे लगाने के लगभग 160–170 दिनों में फल तैयार हो जाता है। इसके पौध से 4–5 वर्षो तक पेड़ी फसल लिया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष फसल लेने के बाद पौधे को जमीन से एक मीटर छोड़कर काटना आवश्यक है।

खेत की तैयारी

सहजन के पौध की रोपनी, गड्ढा बनाकर की जाता है। खेत को अच्छी तरह खरपतवार से साफ कर 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर 45 x 45 x 45 सेंमी. आकार का गड्ढा बनाते हैं। गड्ढे के उपरी मिट्टी के साथ 10 किलोग्राम सड़ा हुआ गोबर का खाद मिलाकर गड्ढे को भर देते हैं। इससे खेत पौध के रोपनी हेतु तैयार हो जाता है।

प्रवर्धन

सहजन में बीज और शाखा के टुकड़ों दोनों से ही प्रबर्द्धन होता हैद्य साल में दो बार फलन के लिए बीज से प्रबर्द्धन करना अच्छा है। एक हेक्टेयर में खेती करने के लिए 500 ग्राम बीज पर्याप्त है।

बीज को सीधे तैयार गड्ढों में या फिर पॉलीथीन बैग में तैयार कर गड्ढों में लगाया जा सकता है। पॉलीथीन बैग में पौध एक महीना में लगाने योग्य तैयार हो जाता है।

शस्य प्रबंधन

अगर पौध हेतु बीज की बुवाई जून – जुलाई में करते हैं। तो एक माह बाद यानी जुलाई – सितम्बर में रोपाई के लिए के सहजन के पौधे तैयार मिलते हैं। लाइन से लाइन की दूरी 12 फिट और प्लांट से प्लांट की दूरी 7 फिट रखी जाती है, एक एकड़ खेत में 518 पौधे लगाए जाते हैं।

माह जुलाई–सितम्बर तक रोपाई का कार्य पूर्ण कर लें, जब लगभग 75 सेंमी. का हो जाये तो पौध के ऊपरी तो तोड़ दें जिसे खोटनी भी कहते हैं। इसका फायदा यह होगा कि इससे बगल से शाखाओं को निकलने में आसानी होगी।

खाद व उर्वरक

सहजन की रोपाई के एक महीने के बाद 100 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम सुपर फास्फेट, 50 ग्राम पोटाश प्रति गड्ढा की दर से डालें। तथा इसके तीन महीने बाद 100 ग्राम यूरिया प्रति गड्ढा का उर्वरक दें। वैज्ञानिकों द्वारा सहजन पर किए

गए शोध से यह पाया गया कि मात्र 15 किलोग्राम गोबर की खाद प्रति गड्ढा तथा एजोसपिरिलम और पी.एस.बी. (5 किलोग्राम/हेक्टेयर) के प्रयोग से जैविक सहजन की खेती अच्छी उपज ली जा सकती है।

सिंचाई व खरपतवार रोकथाम

सहजन की खेती से अच्छी उपज लेने हेतु सिंचाई करना बहुत जरूरी है। सहजन के पौध में सामान्य जल माँग होती है। बीजों के अंकुरण के समय नमी का होना बेहद जरूरी है। इसके अलावा पौधों में फूल लगते समय मिट्टी न अधिक शुष्क हो और ना भी अधिक नमी। अधिक नमी या सूखा होने से फूल झड़ जाते हैं। वैसे तो मुनगे में खरपतवार की देखभाल की आवश्यकता नही होती है। फिर भी मुनगे के पेड़ के आस पास उगे खरपतवार निराई कर हटा देना चाहिए। पौधे के जड़ों में मिट्टी भी चढ़ा देना चाहिए।

पौध संरक्षण

दीमकः

जिस क्षेत्र में कीट की समस्या हो वहाँ इमिडाक्लोप्रिड की 1.5 मिलीलीटर मात्रा को अवश्यकतानुसार पानी में मिलाकर उसका घोल बीजों पर समान रूप से छिड़काव कर उपचारित करें या फिपरोनिल 5SC 10 मिलीलीटर प्रति किलो बीज उपचारित करें। अंतिम जुताई के समय क्यूनोलफॉस 1.5% चूर्ण 10 किलो प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिला दें। या जैविक फफूंदनाशी बुवेरिया बेसियाना एक किलो या मेटारिजियम एनिसोपली एक किलो मात्रा को एक एकड़ खेत में 100 किलो गोबर की खाद में मिलाकर खेत में बीखेर दें।

रसचूसक कीटः

इस प्रकार के कीटों से बचाव हेतु एसिटामिप्रीड 20% की 80 ग्राम मात्रा या थियामेंथोक्साम 25% WG की 100 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव कर दें। यह मात्रा एक एकड़ क्षेत्र के लिए प्रायप्त है. जैविक उपचार के रूप में बवेरिया बेसियाना पाउडर की 250 ग्राम मात्रा भी एकड़ की दर से छिड़काव किया जा सकता है।

पिल्लू कीटः

सहजन पर लगने वाले यह कीट सम्पूर्ण पौधे की पत्तियों को खा जाता है इसके साथ आसपास में भी फैल जाता है। अंडा से निकलने के बाद अपने नवजात अवस्था में यह कीट समूह में एक स्थान पर रहता हैं बाद में भोजन की तलाश में यह सम्पूर्ण पौधों पर बिखर जाता है।

रोकथामः इसके नियंत्रण के लिए सरल उपाय यह है कि कीट के नवजात अवस्था में सर्फ को घोलकर अगर इसके ऊपर डाल दिया जाय तो सभी कीट मर जाते हैं। वयस्क अवस्था में जब यह सम्पूर्ण पौधों पर फैल जाता है तो एकमात्र दवा डाइक्लोरोवास 0.5 मिली. एक लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करने से तत्काल लाभ मिलता है।

फल मक्खी –

सहजन के पौधे पर फल पर इस कीट का कभी–कभी हमला होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु भी डाइक्लोरोवास (नूवान) 0.5 मिली. दवा एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने पर कीट का नियंत्रण होता है।

जड़ सड़न रोगः

रोग नियंत्रण के लिए 5–10 ग्राम ट्राइकोडर्मा एक प्रति किलो दर से बीज उपचार किया जा सकता है. रासायनिक कार्बेण्डजिम 50% WP की 2 ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी में मिलाकर जमीन में तने के पास डालें।

फल की तुड़ाई–

सहजन की किस्म जो साल में दो बार फल देते हैं उनकी तुड़ाई सामान्यतया फरवरी–मार्च और सितम्बर–अक्टूबर में होती है। सहजन के फल में रेशा आने से पहले जब वो कच्चा (करीब एक सेंटीमीटर मोटा) हो और आसानी से टूट जाता हो, तुड़ाई कर लें।

बिना रेशे वाले मुनगे के फलों की बाजार में मांग अच्छी रहती है। और इससे लाभ भी ज्यादा मिलता है। सहजन की तुड़ाई बाजार और मात्रा के अनुसार 1–2 माह तक चलता है।

उपज

फसल की पैदावार मुख्य तौर पर बीज के प्रकार और किस्म पर निर्भर करती है। प्रत्येक पौधे से लगभग 40–50 किलोग्राम सहजन सालभर में प्राप्त हो जाता है।

सहजन की पैदावार प्रति हेक्टेयर 50 से 55 टन हो सकती है।